माँ गायत्री चालीसा

॥ दोहा ॥

ह्रीं, श्रीं क्लीं मेधा, प्रभा,
जीवन ज्योति प्रचण्ड।
शांति, क्रांति, जागृति, प्रगति,
रचना शक्ति अखण्ड॥

जगत जननि, मंगल करनि,
गायत्री सुखधाम।
प्रणवों सावित्री, स्वधा,
स्वाहा पूरन काम॥

॥ चौपाई ॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी,
गायत्री नित कलिमल दहनी।

अक्षर चौबीस परम पुनीता,
इसमें बसे शास्त्र, श्रुति, गीता।

शाश्वत सतोगुणी सतरुपा,
सत्य सनातन सुधा अनूपा।

हंसारुढ़ श्वेताम्बर धारी,
स्वर्ण कांति शुचि गगन बिहारी।

पुस्तक, पुष्प, कमण्डलु, माला,
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।

ध्यान धरत पुलकित हिय होई,
सुख उपजत दुःख-दुरमति खोई।

कामधेनु तुम सुर तरु छाया,
निराकार की अद्भुत माया।

तुम्हारी शरण गहै जो कोई,
तरै सकल संकट सों सोई।

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली,
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।

तुम्हारी महिमा पार न पावैं,
जो शारद शतमुख गुण गावैं।

चार वेद की मातु पुनीता,
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।

महामंत्र जितने जग माहीं,
कोऊ गायत्री सम नाहीं।

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै,
आलस पाप अविघा नासै।

सृष्टि बीज जग जननि भवानी,
कालरात्रि वरदा कल्यानी।

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते,
तुम सों पावें सुरता तेते।

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे,
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे।

महिमा अपरम्पार तुम्हारी,
जय जय जय त्रिपदा भयहारी।

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना,
तुम सम अधिक न जग में आना।

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा,
तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेशा।

जानत तुमहिं तुमहिं हैजाई,
पारस परसि कुधातु सुहाई।

तुम्हारी शक्ति दिपै सब ठाई,
माता तुम सब ठौर समाई।

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे,
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे।

सकल सृष्टि की प्राण विधाता,
पालक, पोषक, नाशक, त्राता।

मातेश्वरी दया व्रतधारी,
मम सन तरैं पातकी भारी।

जापर कृपा तुम्हारी होई,
तापर कृपा करे सब कोई।

मंद बुद्धि ते बुद्धि बल पावैं,
रोगी रोग रहित हो जावैं।

दारिद मिटे, कटे सब पीरा,
नाशै दुःख हरै भव भीरा।

गृह कलेश चित चिंता भारी,
नासै गायत्री भय हारी।

संतति हीन सुसंतति पावें,
सुख संपत्ति युत मोद मनावें।

भूत पिशाच सबै भय खावें,
यम के दूत निकट नहिं आवें।

जो सधवा सुमिरे चित लाई,
अछत सुहाग सदा सुखदाई।

घर वर सुखप्रद लहैं कुमारी,
विधवा रहें सत्यव्रत धारी।

जयति जयति जगदंब भवानी,
तुम सम और दयालु न दानी।

जो सद्गुरु सों दीक्षा पावें,
सो साधन को सफल बनावें।

सुमिरन करें सुरुचि बड़ भागी,
लहै मनोरथ गृही विरागी।

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता,
सब समर्थ गायत्री माता।

ऋषि, मुनि, यति, तपस्वी, योगी,
आरत, अर्थी, चिंतन, भोगी।

जो जो शरण तुम्हारी आवैं,
सो सो मन वांछित फल पावैं।

बल, बुद्धि, शील, विद्या, स्वभाऊ,
धन, वैभव, यश, तेज, उछाऊ।

सकल बढ़े उपजे सुख नाना,
जो यह पाठ करै धरि ध्याना।

॥ दोहा ॥

यह चालीसा भक्ति युत,
पाठ करें जो कोय।
तापर कृपा प्रसन्नता,
गायत्री की होय॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘‍♂️, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल